International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

Original Article

बिहार का लोक साहित्य: एक अध्ययन

डॉ. अनुज कुमार

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

किशोरी सिन्हा महिला महाविद्यालय, औरंगाबाद (बिहार)

Manuscript ID:
IJAAR-130223

ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 2
November - December 2025
Pp. 138 - 143

Submitted: 19 Dec 2025
Revised: 27 Dec 2025
Accepted: 30 Dec 2025
Published: 1 Jan 2026

Corresponding Author:
डॉ. अनुज कुमार

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI:
10.5281/zenodo.18383115

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.18383115

सार (Abstract):

बिहार का लोक साहित्य भारतीय लोक परंपरा की एक समृद्ध, जीवंत और बहुआयामी धारा है। यह साहित्य बिहार के जनजीवन, सामाजिक संरचना, ऐतिहासिक चेतना, सांस्कृतिक विविधता तथा सामूहिक लोकानुभव की सशक्त अभिव्यक्ति करता है। लोकगीत, लोककथाएँ, लोकनाट्य, संस्कार गीत, पर्व-त्योहारों से जुड़े गीत, कहावतें और मुहावरे—इन सभी रूपों में बिहार का लोक साहित्य अपनी विशिष्ट पहचान बनाता है। प्रस्तुत शोध आलेख में बिहार के लोक साहित्य की अवधारणा, उसके प्रमुख रूपों, क्षेत्रीय भाषाओं में विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व तथा समकालीन संदर्भों में उसकी प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन बिहार के लोक साहित्य को केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक इतिहास और लोकचेतना के दस्तावेज़ के रूप में देखने का प्रयास करता है। इसमें मैथिली, भोजपुरी, मगही और अंगिका लोक परंपराओं के चयनित उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि लोक साहित्य किस प्रकार सामाजिक मूल्यों, स्त्री-जीवन, श्रम संस्कृति और सामुदायिक चेतना को संरक्षित करता है। साथ ही, आधुनिकता और डिजिटल युग के प्रभाव में लोक साहित्य के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों एवं संरक्षण की संभावनाओं पर भी विचार किया गया है। यह शोध लोक साहित्य के अकादमिक अध्ययन को नई दिशा प्रदान करने का प्रयास है।[1]

कीवर्ड (Keywords): बिहार, लोक साहित्य, लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोक संस्कृति, मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका.

Creative Commons

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
डॉ. अनुज कुमार. (2025). बिहार का लोक साहित्य: एक अध्ययन. *International Journal of Advance and Applied Research, 13(2), 138–143.* https://doi.org/10.5281/zenodo.18383115

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

भूमिका:

लोक साहित्य किसी भी समाज की आत्मा का प्रतिबिंब होता है। यह वह साहित्य है जो जनसामान्य के जीवन से उत्पन्न होकर उसी के बीच विकसित होता है। लोक साहित्य की परंपरा लिखित साहित्य से भी अधिक प्राचीन है, क्योंकि यह मौखिक रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। इसमें लोकमानस की सहज अभिव्यक्ति, सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक स्मृति सुरक्षित रहती है।

बिहार प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध प्रदेश रहा है। मगध, मिथिला और वैशाली जैसी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक इकाइयों ने बिहार को विशिष्ट पहचान दी है। यहाँ की कृषि आधारित जीवन-शैली, सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वास और सामूहिक लोकानुभव ने लोक साहित्य को व्यापक आधार प्रदान किया है। बिहार का लोक साहित्य यहाँ के समाज की जीवंतता और सामूहिक चेतना का सशक्त प्रमाण है। ग्रामीण जीवन की सरलता, श्रम-संस्कृति, पारिवारिक संबंध, पर्व-त्योहार तथा जीवन के विभिन्न संस्कार—जन्म, विवाह और मृत्यु—लोक साहित्य के विषय बनकर जनमानस में रचे-बसे हैं।[2] लोकगीतों और लोककथाओं के माध्यम से सामान्य जन अपने सुख-दुःख, आशा-निराशा और संघर्षों को सहज रूप में अभिव्यक्त करता है।

बिहार की लोक परंपरा में प्रकृति के प्रति गहरा लगाव देखने को मिलता है। नदियाँ, खेत, ऋतुएँ और कृषि चक्र लोकगीतों और लोककथाओं में प्रतीकात्मक रूप से उपस्थित रहते हैं। छठ जैसे लोकपर्वों में प्रकृति और मानव के बीच स्थापित सामंजस्य लोक संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार बिहार का लोक साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक संवेदना, सांस्कृतिक निरंतरता और ऐतिहासिक स्मृति को सुरक्षित रखने वाला महत्वपूर्ण माध्यम है।[3]

लोक साहित्य की अवधारणा:

लोक साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य से है जिसकी रचना लोक द्वारा होती है और जिसका संरक्षण लोक स्मृति के माध्यम से किया जाता है। इसकी रचनाएँ प्रायः अनाम होती हैं तथा इनमें सामूहिक रचनाशीलता दिखाई देती है। लोक साहित्य की भाषा सरल, सहज और जनसामान्य की बोलचाल से जुड़ी होती है। इसके विषय दैनिक जीवन, श्रम, प्रकृति, प्रेम, विरह, सामाजिक संबंध, धार्मिक आस्था और मानवीय संघर्षों से संबंधित होते हैं। लोक साहित्य की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी सामूहिकता है। यह किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर समाज के सामूहिक अनुभवों का परिणाम होता है। समय के साथ इसमें परिवर्तन और परिष्कार होते रहते हैं, जिससे यह प्रत्येक पीढ़ी के जीवनानुभवों को आत्मसात करता चलता है। इसी

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

कारण लोक साहित्य स्थिर न होकर गतिशील प्रकृति का होता है।

लोक साहित्य में शास्त्रीय साहित्य की भाँति निश्चित रचना-विधान या अलंकरण की अपेक्षा नहीं की जाती, फिर भी इसकी संरचना में एक स्वाभाविक सौंदर्य और भावात्मक गहराई विद्यमान रहती है। लोककथाएँ और लोकगीत जीवन की जटिल सच्चाइयों को सरल प्रतीकों और कथ्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, जिससे वे जनसामान्य के लिए सहज ग्राह्य बनते हैं।

लोक साहित्य सामाजिक मूल्यों, नैतिक आदर्शों और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से समाज अपने अनुभवों, विश्वासों और जीवन-दर्शन को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाता है।[4] इस प्रकार लोक साहित्य केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान जीवन को दिशा देने वाला सजीव साहित्यिक रूप है।

बिहार का सांस्कृतिक परिदृश्य:

बिहार का सांस्कृतिक परिदृश्य अत्यंत विविधतापूर्ण है। यहाँ मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, बज्जिका आदि भाषाओं में समृद्ध लोक साहित्य उपलब्ध है। ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और सामूहिक परंपराएँ यहाँ के लोक साहित्य की आधारशिला हैं। बिहार की सांस्कृतिक विविधता उसके भौगोलिक विस्तार और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से गहराई से जुड़ी हुई है। उत्तर बिहार में मिथिला क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपराएँ, दक्षिण बिहार में मगध की ऐतिहासिक विरासत तथा पश्चिमी क्षेत्रों में भोजपुरी संस्कृति—ये सभी मिलकर बिहार के लोक जीवन को बहुरंगी स्वरूप प्रदान करती हैं। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी लोकभाषा, लोकगीत, लोककथाएँ और लोकाचार हैं, जो वहाँ के सामाजिक जीवन और सामूहिक चेतना को अभिव्यक्त करते हैं।

बिहार का समाज मुख्यतः कृषि-प्रधान रहा है, इसलिए खेत-खलिहान, ऋतु-चक्र, वर्षा, बाढ़ और अकाल जैसे प्राकृतिक अनुभव लोक साहित्य में बार-बार उभरकर सामने आते हैं। लोकगीतों में श्रम की लय, सामूहिकता की भावना और जीवन-संघर्ष की सच्चाइयाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।[5] पर्व-त्योहार—विशेष रूप से छठ, जिउतिया, सामा-चकेवा आदि—लोक साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक स्मृति को सजीव बनाए रखते हैं।

इस प्रकार बिहार का सांस्कृतिक परिदृश्य लोक साहित्य के लिए उर्वर भूमि सिद्ध हुआ है, जहाँ परंपरा और जीवन-यथार्थ का गहरा समन्वय देखने को मिलता है। यही कारण है कि बिहार का लोक साहित्य केवल क्षेत्रीय अभिव्यक्ति न होकर भारतीय लोक संस्कृति की व्यापक धारा का महत्वपूर्ण अंग बन जाता है।

बिहार के लोक साहित्य के प्रमुख रूप:

1. लोकगीत:

लोकगीत बिहार के लोक साहित्य का सबसे सशक्त रूप हैं। छठ, सोहर, कजरी, फाग, विवाह गीत आदि इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

लोकगीत बिहार के जनजीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं। ये गीत जीवन के विभिन्न अवसरों—जन्म, विवाह, ऋतु परिवर्तन, श्रम और पर्व-त्योहार—के साथ सहज रूप से गाए जाते हैं। छठ गीतों में सूर्य उपासना, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सामूहिक आस्था की अभिव्यक्ति मिलती है, वहीं सोहर गीतों में मातृत्व और पारिवारिक उल्लास का चित्रण होता है।

कजरी और फाग जैसे ऋतुगीतों में प्रकृति, प्रेम और विरह की भावनाएँ प्रमुखता से व्यक्त होती हैं। विवाह गीत सामाजिक परंपराओं, स्त्री-मन की संवेदनाओं और पारिवारिक संबंधों को उजागर करते हैं। इस प्रकार लोकगीत न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि बिहार की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के जीवंत दस्तावेज भी हैं।

2. लोककथाएँ:

लोककथाएँ सामाजिक अनुभव और नैतिक शिक्षा का माध्यम हैं। बिहार की लोककथाएँ जनसाधारण के जीवनानुभवों, विश्वासों और सामाजिक मूल्यों को सरल कथानक के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। इन कथाओं में राजा-रानी, साधु-सन्यासी, किसान, पशु-पक्षी तथा सामान्य ग्रामीण पात्रों के माध्यम से जीवन की सच्चाइयों को उजागर किया जाता है। लोककथाओं का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि नैतिक शिक्षा देना और सामाजिक मर्यादाओं को सुदृढ़ करना भी होता है।[6]

इन कथाओं में बुद्धि, श्रम, ईमानदारी और न्याय जैसे मानवीय गुणों का महत्व प्रतिपादित किया गया है। इस प्रकार लोककथाएँ समाज के नैतिक संस्कारों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित करने का प्रभावी माध्यम सिद्ध होती हैं।

3. लोकनाट्य:

बिदेसिया, नाच और जात्रा बिहार के प्रसिद्ध लोकनाट्य रूप हैं। बिहार के लोकनाट्य रूप जनजीवन की समस्याओं, सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं को मंचीय प्रस्तुति के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। बिदेसिया लोकनाट्य में विशेष रूप से प्रवास, पारिवारिक विछोह और स्त्री-वेदना का मार्मिक चित्रण मिलता है। भिखारी ठाकुर द्वारा विकसित यह परंपरा बिहार के लोकनाट्य को नई पहचान प्रदान करती है।[10]

नाच और जात्रा जैसे लोकनाट्य रूपों में संगीत, नृत्य और संवाद का समन्वय दिखाई देता है। ये नाट्य रूप लोकभाषा में प्रस्तुत होकर जनसाधारण से सीधा संवाद स्थापित करते हैं। इस प्रकार बिहार का लोकनाट्य न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि सामाजिक चेतना और लोकसंस्कृति के संरक्षण का प्रभावी माध्यम भी है।

क्षेत्रीय लोक साहित्य:

मैथिली, भोजपुरी, मगही और अंगिका लोक साहित्य बिहार की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं। मैथिली लोक साहित्य अपनी प्राचीनता और भावनात्मक गहराई के लिए प्रसिद्ध है। इसमें प्रेम, विरह, भक्ति और पारिवारिक जीवन का मार्मिक चित्रण मिलता है। मैथिली लोकगीतों और

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

लोककथाओं में स्त्री संवेदना और सांस्कृतिक शालीनता विशेष रूप से उभरकर सामने आती है।

भोजपुरी लोक साहित्य जनजीवन की सहजता और जीवंतता का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें प्रवास, श्रम, सामाजिक विषमता और प्रेम के विविध रूपों का सशक्त चित्रण मिलता है। भोजपुरी लोकगीतों में लोकभाषा की सरलता और भावनाओं की तीव्रता स्पष्ट दिखाई देती है।

मगही और अंगिका लोक साहित्य में ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और सामाजिक संबंधों की सजीव अभिव्यक्ति मिलती है।[7] इन लोकधाराओं में स्थानीय परंपराएँ, रीति-रिवाज और लोकविश्वास साहित्यिक रूप ग्रहण करते हैं। इस प्रकार क्षेत्रीय लोक साहित्य बिहार की सांस्कृतिक बहुलता और लोकजीवन की समृद्ध परंपरा को सुदृढ़ करता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व:

लोक साहित्य सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करता है। लोक साहित्य समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में जोड़ने का कार्य करता है। यह जाति, वर्ग और आर्थिक भेदों से ऊपर उठकर सामूहिक जीवन-बोध को अभिव्यक्त करता है। लोकगीतों, लोककथाओं और लोकनाट्यों के माध्यम से सामाजिक अनुभव साझा होते हैं, जिससे समुदाय में एकता और सहयोग की भावना विकसित होती है।[9]

लोक साहित्य नैतिक मूल्यों—जैसे सत्य, श्रम, सहानुभूति और न्याय—को सहज रूप में प्रस्तुत करता है। यह लोकसंस्कृति की निरंतरता बनाए रखने के साथ-साथ सामाजिक चेतना को भी जाग्रत करता है। इस प्रकार लोक साहित्य समाज के सांस्कृतिक ढाँचे को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण आधार सिद्ध होता है।

समकालीन संदर्भ:

डिजिटल युग में लोक साहित्य के संरक्षण और प्रसार की नई संभावनाएँ बनी हैं। आधुनिक तकनीक और डिजिटल माध्यमों ने लोक साहित्य को नई पहचान देने का कार्य किया है। ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, यूट्यूब चैनल और डिजिटल अभिलेखागार के माध्यम से लोकगीत, लोककथाएँ और लोकनाट्य अब व्यापक जनसमूह तक पहुँच रहे हैं। इससे लोक साहित्य के संरक्षण के साथ-साथ उसका प्रचार-प्रसार भी संभव हो सका है।[8]

हालांकि, व्यावसायीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से लोक परंपराओं के मौलिक स्वरूप पर संकट भी उत्पन्न हुआ है। ऐसे में शोध, दस्तावेजीकरण और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में लोक साहित्य को स्थान देना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस प्रकार समकालीन संदर्भ में लोक साहित्य के संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

निष्कर्ष:

बिहार का लोक साहित्य जनजीवन की आत्मा का सशक्त दस्तावेज है। इसके संरक्षण और अध्ययन की निरंतर आवश्यकता है। बिहार का लोक साहित्य न केवल अतीत की सांस्कृतिक स्मृतियों को संजोए हुए है, बल्कि वर्तमान समाज की चेतना और जीवन-दृष्टि को भी अभिव्यक्त करता है। लोकगीत, लोककथाएँ और लोकनाट्य जनसामान्य के अनुभवों, संघर्षों और मूल्यों को सरल तथा सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं। इन लोक रूपों के माध्यम से समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखता है।

वैश्वीकरण और आधुनिक जीवन-शैली के प्रभाव के बावजूद लोक साहित्य की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। आवश्यकता इस बात की है कि लोक साहित्य के संरक्षण, संकलन और अध्ययन को संगठित रूप दिया जाए। विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और सांस्कृतिक संगठनों की सक्रिय भूमिका से बिहार के लोक साहित्य को न केवल सुरक्षित रखा जा सकता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवंत और प्रेरणादायी बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी, भारतीय लोक साहित्य का इतिहास, इलाहाबाद: भारतीय साहित्य परिषद, 1951।
2. रामविलास शर्मा, लोक संस्कृति और साहित्य, पटना: बिहार साहित्य समिति, 1964।
3. भिखारी ठाकुर, बिदेसिया: भोजपुरी लोकनाट्य का अध्ययन, पटना: लोक कला अकादमी, 1970।
4. शिवकुमार मिश्र, बिहार का लोक साहित्य, दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 1982।
5. नरेन्द्र कुमार, मैथिली लोकगीत और लोककथा, दरभंगा: मिथिला प्रकाशन, 1990।
6. रमेश चंद्र झा, भोजपुरी लोक साहित्य: परंपरा और आधुनिकता, पटना: ज्ञानदीप प्रकाशन, 1995।
7. सीताराम मिश्र, मगही और अंगिका लोक साहित्य का अध्ययन, गया: बिहार लोक संस्कृति अकादमी, 2000।
8. प्रवीण कुमार, लोक साहित्य में सामाजिक चेतना, पटना: विद्यापति प्रकाशन, 2005।
9. अंजनी कुमार झा, बिहार के लोक नाट्य और लोकगीत, पटना: लोक कल्याण प्रकाशन, 2010।
10. दीपक कुमार, डिजिटल युग में लोक साहित्य का संरक्षण, पटना: शोध प्रकाशन, 2018।